International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1308-1311

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना से बाल लिंगानुपात और लड़की की शिक्षा में सुधार एक अध्ययन (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में)

निशा ठाकुर[1], डॉ. इन्दु संतोष[2]

[1] एम. फिल. (वणिज्य) प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग, (षिक्षा षास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एसोसिएटेड प्रोफेसर प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग, (षिक्षा षास्त्र), डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

वर्तमान समय में लिंगानुपात के स्थिरिकरण के लिए भारत सरकार कई योजना चला रहीं है जिसमें से एक योजना, 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना भी चलाई जा रही है। जिसका उद्देश्य है कि बेटियों के लिंगानुपात को कम करना एवं उनकी शिक्षा को बढ़ावा देना है। इस योजना को समाज सेवी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान कर रहीं हैं। आज समय तेजी से बदल रहा है। पुरूषों के बराबर स्त्रियों की भी शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। सरकार द्वारा ऐसे अनेक योजनाएँ चलाए जा रहे हैं जिससे बालिकाओं के निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। लोगों में जागरूकता फैलाने का काम स्वयंसेवी संस्थाएं कर रही हैं। इन सब ने आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोगों का रूझान पढ़ाई की ओर कर दिया है। आज की लड़कियां घर और बाहर दोनों को संभाल रही हैं। सरकार द्वारा बालिका कल्याण हेतु अनेक योजनाएँ चलाए जा रहे हैं। इस शोध में शोधकर्ता द्वारा दुर्ग जिले के ग्रामीण लाभान्वित परिवार में बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं योजना के प्रति जागरूक है।

मूल शब्द : लिंगानुपात, 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं, राष्ट्रव्यापी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, राष्ट्रव्यापी।

प्रस्तावना

भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा बड़ा देश है। परन्तु यहां लिंगानुपात की असमानता एक विशेष एवं देश–व्यापी समस्या के रूप में सामने आई हैं। देश में लिंगानुपात का अन्तर तब से देखा जा रहा है, जब से जनगणना प्रारंभ हुई है, ब्रिटिश काल में सन् 1871 में जनगणना कि गई थी तथा यह जनगणना प्रति दस वर्षो के अन्तराल में की जाती रहीं है। जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इसी तर्ज पर कि जाती है। देखा गया है कि सन् 1901 से लेकर सन् 2001 तक कि जनसंख्या के आंकलन में लिंगानुपात असमान रहा है।

यहां पुरुष लिंग कि अपेक्षा स्त्री लिंगानुपात में कमी देखी गई है। वर्तमान में एक देश–व्यापी समस्या है तथा इसका निराकरण अतिआवश्यक है। सन् 2011 कि जनगणना के अनुसार भारत में लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 940 स्त्री हैं तथा इसी तरह पूर्वोत्तर जनगणना में भी अन्तर देखा गया हैं। लिंगानुपात कि समानता के बहुत सारे कारण हैं जिसमें स्त्रियों के लिंगो के प्रति संकिर्ण विचारधारा कन्या भ्रुण हत्या सामाजिक और आर्थिक कारणों से यह असमानता है।

परन्तु यह असमानता देश के लिए उसके विकास के राह में एक बाधा के रूप में भी है। जिस तरह एक वाहन को चलने के लिए दो पहियों कि आवश्यकता होती है, उसी तरह जीवन को अच्छे से यापन के लिए स्त्री एवं पुरुषों कि आवश्यकता होती है। एक परिवार को निर्मित करने के लिए भी स्त्री एवं पुरुष कि संयुक्त भूमिका होती है। अगर यह लिंगानुपात में अन्तर बना रहा तो इसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक नुकसान समाज को उठाने पड़ेंगे। देश कि व्यवस्था पर विपरित प्रभाव पड़ेगा क्योंकि यह सभी क्षेत्रों में अपना योगदान देती है। एक स्त्री सबसे पहले एक परिवार के लिए फिर समाज के लिए तथा देश के लिए यथोचित् भूमिका निभाति हैं।

अगर यह लिंगानुपात में अन्तर बना रहा तो इसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक नुकसान समाज को उठाने पड़ेंगे। देश कि व्यवस्था पर विपरित प्रभाव पड़ेगा क्योंकि यह सभी क्षेत्रों में अपना योगदान देती है। सबसे पहले एक परिवार के लिए फिर समाज के लिए तथा देश के लिए यथोचित् भूमिका निभाति हैं।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओं योजना

भारत में असंतुलित बाल–लिंग अनुपात देश के सामने बड़ी चुनौती बन चुका है। यह चुनौती सिर्फ सरकार के लिए नहीं है परंतु पूरे समाज के लिए गंभीर है। भारत सरकार ने 100 ऐसे जिलों को चिन्हित किया जिसमें बाल–लिंग अनुपात लगातार कम होता जा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' की शुरुआत जनवरी 2015 में की।

'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' मुहिम समूचे देश के गरिमा को बचाने एवं लड़कियों के घटते जन्म को रोकने का अनूठा प्रयास है। समूचे देश के सामने यह चुनौती है कि लगातार कम हो रहे बाल लिंग अनुपात को कैसे रोका जाए। केंद्र सरकार के लिए यह जरूरी है कि इस योजना में आवंटित बजट का सही उपयोग करवाएं, समय सीमा को ध्यान में रखते हुए नए तरीकों से जिलों की जिम्मेदारी तय करें, प्रत्येक जिला के प्रयासों एवं कार्य को हर महीना वेबसाइट में प्रकाशित किया जाए ताकि कार्य पद्धति में पारदर्शिता आये।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (BBBP) योजना को क्यों लागू किया गया

जहाँ देश की जनसंख्या में बृद्धि का ग्राफ लगातार ऊपर की ओर है वहीं लड़कियों के मामले में यह रिपोर्ट बिल्कुल विपरीत है। वर्ष

2011 की नवीनतम जनगणना के अनुसार 0 से 6 वर्ष के आयु समूह में बालिकाओं के लिंगानुपात (Child Sex Ratio (CSR) में गिरावट देखने को मिली है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जहाँ प्रति 1,000 लड़कों में 927 लड़कियां थी वो वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति 1,000 लड़कों में 918 लड़कियां ही रह गई हैं।

शोध के चयन का उद्देश्य

'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' मुहिम समूचे देश के गरिमा को बचाने एवं लड़कियों के घटते जन्म को रोकने का अनूठा प्रयास है। समूचे देश के सामने यह चुनौती है कि लगातार कम हो रहे बाल लिंग अनुपात को कैसे रोका जाए। केंद्र सरकार के लिए यह जरूरी है कि इस योजना में आवंटित बजट का सही उपयोग करवाएं, समय सीमा को ध्यान में रखते हुए नए तरीकों से जिलों की जिम्मेदारी तय करें, प्रत्येक जिला के प्रयासों एवं कार्य को हर महीना वेबसाइट में प्रकाशित किया जाए ताकि कार्य पद्धति में पारदर्शिता आये। वर्तमान में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता को बढावा देने के लिए 'बेटी बचाओं – बेटी पढ़ाओं योजना के बारे में जानने एवं इसके प्रभावों का विस्तृत एवं वास्तविक अध्ययन करने हेतु विषय का चुनाव किया गया है।

शोध के महत्व

इस शोध के माध्यम से 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बाल लिंग अनुपात में गिरावट को रोकने की एक पहल कर सकते है। साथ–ही साथ बालिका शिक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है। इस योजना के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने, उन्हें सम्मान दिलाने के अवसरों में वृद्धि कर सकते है। हम समाज में बढ़ते हुए बुराईयों को खत्म कर सकते है, तथा इनके प्रति जागरूता को बढ़ा सकते है। जिससे समाज को बालिकाओं के प्रति शिक्षा एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने की एक नयी दिशा प्रदान की जा सके। अतः किसी भी वस्तु विशेष को हम शोध के द्वारा उसके सभी पहलुओ को जॉच–परख कर उसके बारे मे एक विश्वसनीय तथ्य प्रदर्शित कर सकते है, एवं इस शोध के द्वारा कन्या भ्रुण का गर्भपात एवं बालिका शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त किया जा सकता है। जिससे आधुनिक समाज को बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा।

शोध समस्या

'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना के कार्यक्रम की रूप–रेखा को ध्यान से समझना एवं इसके क्रियान्वयन की प्रभावशीलता को आंकना अति आवश्यक है। वैसे तो कार्यक्रम की प्रभावशीलता मुहिम के प्रचारों को सुनकर एवं देखकर ऐसा लगता है कि लगभग 200 करोड़ वाली योजना का क्रियान्वयन भी जमीनी स्तर पर भी तेज गति से चल रहा होगा। परंतु जिलों में क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति केंद्र सरकार की उम्मीदों से अभी दूर है। अतः यह सोचा गया है कि इस योजना से उत्पन्न समस्याओं में सुधार कर नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसलिए बालिका जन्म दर एवं उनकी शिक्षा को बढ़ावा देने के शोधार्थी द्वारा निम्न विषय को चुना है – **''बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना से बाल लिंगानुपात और लड़की की शिक्षा में सुधार एक अध्ययन'' (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में)।**

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. लिंगानुपात में असमानता के कारणों का अध्ययन करना।
2. बालिकाओं के अधिकारों, गरिमा तथा समानता का अध्ययन करना।
3. 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिका की उत्तरजीविता और संरक्षण सुनिश्चित करना।
4. कन्या भ्रुण हत्या का लिंगानुपात पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का अध्ययन करना।
5. महिला सशक्तिकरण के लिए बालिका शिक्षा के विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पना

$H0_1$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं के शिक्षा को बढ़ावा मिला होगा।

$H0_2$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं लिंगानुपात में कमी आयी होगी।

$H0_3$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं को आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ होगा।

संभावित सीमॉए

- इस शोध के लिए शोधार्थी द्वारा दुर्ग जिले के पाटन विकासखण्ड को तक सीमित किया जाएगा।
- इस शोध में 50 परिवार को लिया गया है।
- इस शोध हेतु 0–14 वर्ष के बालिकाओं तक सीमित किया जाएगा। निर्दशन में त्रुटि की संभावना हो सकती है।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य के हृदय स्थल पर शिवनाथ नदी के पूर्व में स्थित है दुर्ग जिला। जो 20° 54′ उत्तर अक्षांश से 21° 32′ उत्तर अक्षांश तक तथा 81° 10′ पूर्व देशांतर से 81° 36′ पूर्व देशांतर तक फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 232091 हेक्टेयर है। जिले के बीचो बीच से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक – 06 (मुम्बई – नागपुर – कोलकाता राजमार्ग) गुजरता है। रेल्वे की दक्षिण–पूर्व रेल सेवा यहां उपलब्ध है। दुर्ग जिले का निकटस्थ हवाई अड्डा रायपुर एयरपोर्ट है जो यहां से लगभग 60 किलो मीटर दूर स्थित है। जिला ऊपरी शिवनाथ – महानदी घाटी के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है। जिले का अधिकतम हिस्सा छत्तीसगढ़ का मैदानी हिस्सा है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ में औद्योगिक विकास का अग्रदूत है। जहां भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना के साथ न सिर्फ जिले बल्कि संपूर्ण प्रदेश का चौतरफा औद्योगिक विकास हुआ है। इसके साथ ही दुर्ग जिला सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक सामंजस्य, संसाधनों के अर्थपूर्ण उपयोग एवं विभिन्न जातियों एवं धर्मो के लोगों के बीच आपसी सौहार्द्र के लिये भी जाना जाता है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राज्य का गौरव है। पुरातनकाल से अब तक दुर्ग जिले का इतिहास और वर्तमान अपने आप में प्राचीन मूल्यों और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय है। यहां एक ओर तो सांस्कृतिक मूल्य गहराई से जुड़े हुए हैं तो वही निरंतर पल्लवित होती उद्यमिता इसे एक औद्योगिक जिले के रूप में स्थापित करती है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण के माध्यम से दुर्ग जिले के बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं योजना के लाभार्थी परिवार को चुना गया है।

जनसंख्या

जनसंख्या से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता हैं, जिसे शोधकर्ता अपने शोध के संदर्भ में स्पष्ट रूप से परिभाषित करता हैं, तथा उसकी पहचान करके रखता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। प्रस्तुत शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में दुर्ग जिले के ग्रामीण परिवारों का चयन किया गया है।

न्यादर्श

शोधकार्य में शोधकर्ता के वे अन्तिम उत्तर ही परिकल्पना होते हैं, इनकी जांच हेतु न्यादर्श का चयन किया जाता है। अध्ययन का विषय सीमित हो या विस्तृत उसकी सामाजिक इकाईयों कि संख्या बहुत अधिक होती है, तथा इनका अध्ययन कर पाना असंभव होता है। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि समस्या से सम्बंधित समष्टि में से कुछ का चयन कर लिया जाये। चयन इस प्रकार का हो जो कि एक समूह सम्पूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला हो। प्रस्तुत शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में दुर्ग जिले से 50 लाभार्थी ग्रामीण परिवारों क का चयन किया गया है। जिसमें शोधकर्ता द्वारा उद्देश्य एवं परिकल्पना के आधार पर प्रश्नावली का संकलन करना है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लधुशोध हेतु शोधार्थी द्वारा **'स्वर्निमित प्रश्नावली'** का प्रयोग किया गया है। प्रयुक्त उपकरण में कुल प्रश्न 31 प्रश्न है जो बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं योजना के लाभार्थी परिवार के अनुसार बनाया गया है। इस प्रश्नावली में 14 प्रश्न परिवार के जानकारी के अंर्तगत प्रश्न सम्मिलित है। 15 से 29 तक के प्रश्न 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना के अंतर्गत प्रश्न सम्मिलित है, तथा 30 से 31 प्रश्न योजना के सम्बन्धित प्रश्न एवं योजना के सम्बन्धित सुझाव दिया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

प्रत्येक परिकल्पनाओं के आधार पर विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए कुछ सांख्यिकी गणना की आवश्यकता होती है। किसी भी संमकों का विश्लेषण करना होता है तो उन समंकों के आधार पर सांख्यिकीय विधि का उपयोग की जाती है। शोधकर्ता ने अपने शोध में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया हैं।

आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष

$H0_1$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं के शिक्षा को बढ़ावा मिला होगा।

प्रस्तुत परिकल्पना के आधार पर आंकड़ों के संकलन किया गया है जिसमें 83 प्रतिशत परिवार ने बालिकाओं के शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिससे उनकी शैक्षणिक स्थिति मजबुत होना कहा है। तथा 17 प्रतिशत परिवार ने इससे कोई लाभ नहीं हो रहा है। इनका कहना है कि इस योजना के बारे में सम्पूर्ण जानाकरी प्राप्त नहीं हो पायी है जिससे इस योजना का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। अतः इससे स्पष्ट होता है कि दुर्ग जिले के ग्रामीणों को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं योजना से बालिकओं के शिक्षा को बढ़ावा मिला है।

$H0_2$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं लिंगानुपात में कमी आयी होगी।

प्रस्तुत परिकल्पना के आधार पर आंकड़ों के संकलन किया गया है जिसमें 98 प्रतिशत परिवार ने बालिकाओं के जन्म को बढ़ावा मिल रहा है। जिससे उनकी लिंगानुपात में बढ़ रही है। इसका कारण यह है कि बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं अभियान से उनके बेटियों की परवरिश अच्छे से हो रहा है। तथा 02 प्रतिशत परिवार में बेटियों के जन्म को बढ़ावा नहीं दे पा रहे है। इनका कहना है कि इस आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बेटियों के पालन पोषण में समस्या उत्पन्न होती है। उनको लगता है कि आज भी बेटियां परिवार के लिए बोझ होती है। और ना ही 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना के बारे में जानकारी प्राप्त है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि दुर्ग जिले के ग्रामीणों को बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं योजना से बालिकाओं लिंगानुपात में कमी आयी है।

$H0_3$- 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' योजना से बालिकाओं को आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ होगा।

प्रस्तुत परिकल्पना के आधार पर आंकड़ों के संकलन किया गया है जिसमें 76 प्रतिशत परिवार ने 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना से बालिकाओं के आर्थिक अनुदान मिल रहा है। जिससे उनकी अध्ययन में हो रहे खर्च का वहन करती है। इसका कारण यह है कि बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं अभियान से उनके बेटियों की अध्ययन अच्छे से हो रहा है। तथा 24 प्रतिशत परिवार में बालिकाओं के अध्ययन कार्य हेतु सामग्री उपलब्ध नहीं करा पा रहा है, तथा उनको किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग दे पा रहा है। इसका कारण यह है कि आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बेटियों के पालन–पोषण में समस्या उत्पन्न होती है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि दुर्ग जिले के ग्रामीणों को 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना से बालिकाओं आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है।

सुझाव

प्रशासन हेतु सुझाव

1. प्रशासन को आवश्यकतानुसार समय–समय पर प्रारंभिक स्तर पर 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम का मूल्यांकन करना चाहिए।
2. वर्तमान समय में 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना को बढ़ाने हेतु विद्यालयों में पारिवारिक जीवन कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण, आत्म–रक्षा प्रशिक्षण चलाये जा रहे हैं किन्तु इन कार्यक्रमों को एक अभियान अथवा मिशन के रूप में चलाने की आवश्यकता है जिससे कि बालिकाओं का विद्यालय में अवधारणा सुनिश्चित किया सके।
3. विद्यालयों की स्थापना के साथ यह संकल्पना की जानी चाहिए कि ग्रामीण स्तर पर बालिकाओं के उपयुक्त संसाधन मिल सके। इसलिए वर्तमान समय में आधारभूत संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है।
4. प्रशासन को 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम का मूल्यांकन करने हेतु राज्य, जिला, विकासखंड, न्याय पंचायतों का सहयोग लेना चाहिए तथा इनके सहयोग में समन्वय स्थापित कराना चाहिए।
5. प्रशासन को विभिन्न निचली स्तर की संस्थाओं के साथ मिलकर 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना से सम्बन्धित जागरूकता हेतु कार्यक्रम चलाई जानी चाहिए।
6. विद्यालयों की बालिकाओं को एक ऐसा मंच देना चाहिए जिससे कि प्रत्येक बालिकाओं में आत्माभिव्यक्ति का गुण विकसित हो सके और वह अपनी योग्यता को केवल विकास खंड स्तर पर ही नहीं वरन् राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर भी प्रदर्शित कर सके।

अभिभावक हेतु सुझाव

1. अभिभावकों को विद्यालयों में आयोजित गतिविधियों में सदैव भाग लेना चाहिए। जिससे उनकी बालिकाओं के शैक्षणिक स्थिति एवं उनके अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके।
2. अभिभावकों को विद्यालय में अपनी बच्चियों की शैक्षिक प्रगति पर चर्चा करनी चाहिए।
3. अभिभावकों को बच्चियों को शिक्षा का पूर्ण अवसर देना चाहिए जिससे कि उनमें जीवन–कौशल का गुण विकसित हो सके।
4. अभिभावकों को बालिकाओं के विकास के सम्बन्ध में 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना के बारे में सम्पूर्ण जानकारी रखें।
5. अभिभावकों को 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना से अन्य योजनाओं के बारे में जानकारी रखना चाहिए।

उपसंहार

'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम से बालिकाओं में जीवन कौशल की योग्यता विकसित हो रही है। शोध अध्ययन में पाया गया है कि 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम से बालिकाओं के लिंगानुपात के गिरावट में कमी आयी हैं। ग्रामीणों ने भी बालिकाओं का स्वयं के विषय में सकारात्मक विचार है उनमें अपनी योग्यता को जानने व समझने की क्षमता निहित कराने हेतु सक्षम प्रयास कर रहे हैं। प्रारंभिक स्तर पर 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम के माध्यम से बालिकाओं में आत्म गौरव तथा सबलीकरण को सुनिश्चित कर रहा है। शोध अध्ययन में पाया गया कि अध्यापक विशिष्ट विषयों एवं कार्य–पुस्तिकाओं पर प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षण को रुचिकर बना रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि 'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं' योजना कार्यक्रम से बालिकाओं की शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं में आत्म–गौरव तथा सबलीकरण को सुनिश्चित कर रहा है। जिससे उनके आर्थिक स्थिति में भी परिर्वतन देखा गया है।

संदर्भ सूची

1. सुमित्रा कुमारी (2006), ''महिला सशक्तिकरण की गतिशीलता'', अल्फा प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. के मुथलागु, (सितंबर 2008) ''भारत महिला विकास'', परिप्रेक्ष्य ''कुरुक्षेत्र, खंड 56, नहीं 11 पीपी, 26–28
3. एन शर्मिला और ए.सी. धस, ''भारत में महिला शिक्षा का विकास'', एमपीआरए पेपर नं। 20680, म्यूनिख विश्वविद्यालय, जर्मनी, 2010।
4. मिश्र, डॉ. बलदेव प्रसाद ''छत्तीसगढ़ का परिचय'' पृ. 17'18।
5. जिला योजना एवं सांख्यिकीय कार्यालय छ.ग. शासन, दुर्ग (2009).
6. Beti Bachao Beti Padhao - Vikaspedia 2016. *Vikaspedia.in*. Retrieved -06-12.
7. Sandeep Kumar, K., Rajeev Mullick 19 May 2017. "UP govt sounds alert over Beti Bachao Beti Padhao scheme fraud". Hindustan Times. Retrieved 12 June 2017.
8. Gupta, Suchandana October 3, 2011. "Skewed sex ratio: MP launches 'Beti Bachao Abhiyan'". *Times of India*. Retrieved September 27, 2012.
9. Press Trust of India 28 March 2017. "Haryana govt cautions people against frauds under Beti Bachao-Beti Padhao scheme". The Indian Express. Retrieved 12 June 2017.